|  |
| --- |
| 10. August 2025 |
| **19. Sonntag im Jahreskreis C** |
| Erste Lesung: Weish 18,6-9; Zweite Lesung: Hebr 11,1-2.8-19 oder 11,1-2.8-12;  |
| Evangelium: Lk 12,32-48 oder 12,35-40 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 551, 1+3! | Nun singt ein neues Lied dem Herren |
|  | GL 481, 1+2! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 2 | Herr Jesus |
|  | GL 151 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre dir Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 33, 1. 12. 18-20 u. 22 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 56, 1 | Freut euch: wir sind Gottes Volk |
|  | oder |  |
|  | GL 392, 4+5 | Lobe den Herren |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Seid wachsam und haltet euch bereit!* |
|  | *Denn der Menschensohn kommt zu einer Stunde,* |
|  | *in der ihr es nicht erwartet.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 793 | Dich, o Gott, wir Vater nennen |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 435, 1+4! | Herr, ich bin dein Eigentum |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 800 | Herr, gib uns deinen Frieden |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 465, 3+4 | Das Jahr lehrt |
|  | GL 96, 2+6 | Die Erde kreist dem Licht entgegen |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 478, 3+5 | Die Kirche ist erbauet |
|  | GL 795 | Möge die Straße |